ISSN 0975-119X

OUR PUBLICATIONS



Jobus Press
448, Pocket-V, Mayur Vihar, Phase-I, Delhi-110091 (INDIA)
Ph.: 011-22753916

UGC-CARE GROUP I LISTED
वर्ष 13 अंक 1 जनवरी-फरवरी 2021

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

India's Leading Referred Hindi Language Journal



IMPACT FACTOR : 5.051

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मासिक शोध पत्रिका

प्रधान संपादक

डॉ. अश्विनी महाजन

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

संपादक

डॉ. प्रसून दत्त सिंह

महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी

डॉ. फूल चन्द

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

दृष्टिकोण प्रकाशन

गदल का प्रासंगिक-विमर्श

डॉ० रमेशकुमार टण्डन

विभागाध्यक्ष (हिन्दी), शासकीय महात्मा गांधी स्नातकोत्तर महाविद्यालय खरसिया, छ.ग.

संजीव राघव की कहानी 'गदल', एक निडर, स्वाभिमानी स्त्री 'गदल' की ही कहानी है; जो पति की मृत्यु के बाद महज इस कारण से अपने भरे-पूरे परिवार को छोड़कर किसी दूसरे मर्द के पास चली जाती है कि उसका देवर डोडी उसे अपनाया नहीं, उसकी बहुएँ आँखें तरेरती थीं। वह अपने पति के मृत्युभोज की कमी को पूरा करने के लिए अपने देवर के मृत्युभोज पर पूरी बिरादरी को खिलाते हुए अपने प्राणों को उत्सर्ग कर देती है। अंत में दरोगा को अपना परिचय देते हुए गदल कहती है, मैं ''जो एक दिन अकेला न रह सका, उसी की....हूँ। परन्तु क्या इस कहानी से पाठक सही दिशा पाता है ? कहानी का शीर्षक 'गदल' होना सत्य है ? 'डोडी' ने कहानी में क्या भूमिका निभाई ? आज यह विमर्श का विषय है।

कूटशब्दः- ''उत्सर्ग, गदल का या डोडी का ?''

चरित्र विवरण

संजीव राघव की 'गदल', आत्मपीड़ा, उत्सर्ग, समर्पण और प्रेम की कहानी है, जो देवर-भाभी के इर्द-गिर्द घुमती है। यहाँ 'गदल', भाभी की भूमिका निभाती है। कहानी में गदल की अवस्था 45 वर्ष है। 50 वर्ष का 'डोडी', उसका देवर है। गदल के पति 55 वर्षीय 'गुन्ना' का देहांत हो चुका है। गदल की पाँच संतानें हैं- चमेली (विश्वेरा गाँव में व्याही गई), चम्पा (झाज गाँव में व्याही गई), निहाल (अवस्था 30 वर्ष, इसकी पत्नी का नाम दुल्लो), तेज तथा नारायण (अवस्था 22 वर्ष, अंतिम पुत्र)। डोडी, गुन्ना का सगा भाई है। डोडी की बहू और बच्चे, सभी का देहांत हो गया है। अब यह अकेला है। डोडी की पूरी कमाई गदल के परिवार पर ही खर्च होती है, यह गदल लोगों के साथ ही खाता है। ये लोग खारी गूजर हैं। मौनी को गदल, दूसरा पति बनाती है, इसकी अवस्था मात्र 32 वर्ष है। दुल्लो इसकी भाभी है। मौनी लोग लौहरे गूजर हैं।

कथावस्तु विवरण

पति की मृत्यु के कुछ दिन बाद जब बहुएँ, गदल को आँखें तरेरकर देखने लगीं और देवर ने गदल को पत्नी के रूप में नहीं अपनाया, तब गदल अपने देवर डोडी से बदला लेने के लिए तथा अपने पति की मृत्यु पर देवर और बेटों के द्वारा पूरी बिरादरी को अच्छे से नहीं खिला पाने के गम में, अपने से छोटी जाति लौहरे गूजर - मौनी (अवस्था 32 वर्ष मात्र, विधूर) के पास चली गई। इससे बहुत जग हँसाई हुई। गदल सुबह ही मौनी के घर गई थी, शाम को इसके बेटे उसे बोधकर वापस घर ले आए। रात भर रहने के बाद ऊषाकाल में पुनः मौनी के घर आ गई। मौनी की भाभी का नाम दुल्लो है। दुल्लो चरखा कात रही थी तभी गदल का छोटा बेटा नारायण मौनी के घर गया, गदल ने दण्ड के रूप में अपने जेवर नारायण को दे दिया।

इधर, ढोलो गाने की आवाज को सुनकर, बिना खाए ही डोडी ढोल सुनने चल दिया। निहाल जब उसे लेकर आया, तब डोडी का शरीर गरम था। डोडी बहुत दिनों बाद ढोलो सुनने गया था। इससे पहले वह गुन्ना की शादी की रात ढोलो सुना था। सुबह होते-होते डोडी का देहांत हो गया।

'गिरॉज' ने मौनी के घर अपनी काकी गदल को डोडी के देहांत की खबर सुना दी थी। मौनी के मना करने के बावजूद, रात के तीसरे प्रहर में छत के रास्ते कूदकर मौनी के घर से वह भाग निकली और डोडी के घर जा पहुँची। अपने पति के दशकर्म में मात्र 25 लोगों को खिला पाने के गम से निजात पाने का अवसर आ गया था, उसने डोडी के दशकर्म में पूरी बिरादरी को धूमधाम से खिलाने का प्रबंध दरोगा को रिश्वत देकर कर लिया।

मौनी ने गदल के भाग जाने का बदला लेते हुए उसके कार्य को सम्पन्न नहीं होने देने का निश्चय लिया और बड़े दरोगा को रिश्वत देकर डोडी के दशकर्म में सिपाही भेजने का इंतजाम कर लिया।

दशकर्म हो रहा था, लोग खा रहे थे, जा रहे थे, तभी अंतिम समय में एक सिपाही कारज रोकने के लिए पहुँचा। ये नहीं माने, खाना चलता ही रहा। खाने की अंतिम पंक्ति थी। हथियारबंद पुलिस आ धमकी। 25 से अधिक लोगों को खिलाने के कारण पुलिस कार्यवाही करना चाहती थी। गदल सभी को निर्विघ्न खिलाना चाहती थी। नारायण चोर लोगों के साथ छत पर बंदूक लेकर बैठा था। सभी को खाने के बाद पीछे के रास्ते से बिदा कर दिया गया। निहाल, नारायण और सभी बहु-बेटों को सुरक्षित लेकर निकल गया। कारज सम्पन्न हो गया था। परन्तु गदल पुलिस को रास्ता रोके सामने खड़ी थी, बंदूक से गोलियाँ चलने लगीं। गदल के पेट में गोली चली। पुलिस ने देखा, वहाँ कोई नहीं है, बस एक औरत है। दरोगा ने झल्लाकर पूछा, तू कौन है ? लहुलुहान गदल ने क्षीण स्वर में कहा, ''जो एक दिन अकेला न रह सका, उसी की....।'' और उसका सिर लुढ़क गया।

महत्त्वपूर्ण संवाद

शाम को गदल के बेटे इसे बांधकर ले आए, उसी रात्रि में गदल और डोडी में वार्तालाप होने लगी। वार्तालाप के दौरान डोडी का गदल के प्रति कथन- (1) ''सब चले जाते हैं। एक दिन तेरी देवरानी चली गई, फिर एक-एक करके तेरे भतीजे भी चले गए। भैया भी चला गया। पर तू जैसी गई; वैसे तो कोई भी नहीं गया। जग हँसता है, जानती है ?''

गदल का डोडी के प्रति कथन- (2) ''जग हँसाई से मैं नहीं डरती देवर! जब चौदह की थी, तब तेरा भैया मुझे गाँव में देख गया था। तू उसके साथ तेल पिया लट्ठ लेकर मुझे लेने आया था न, तब ? मैं आई थी कि नहीं ?'' (3) ''मेरा मरद तो मर गया। जीते-जी मैंने उसकी चाकरी की, उसके नाते उसके सब अपनों की चाकरी बजाई। पर जब मालिक ही न रहा, तो काहे का हड्डकंप उठाऊँ ? यह लड्डके, यह बहुएँ ! मैं इनकी गुलामी नहीं करूँगी।''

डोडी का गदल के प्रति कथन- (4) ''पर क्या यह सब तेरी औलाद नहीं बावरी। बिल्ली तक अपने जायों के लिए सात घर उलट-फेर करती है, फिर तू तो मानुष है। तेरी माया-ममता कहाँ चली गई ?''

गदल का डोडी के प्रति कथन- (5) ''कायर ! भैया तेरा मरा, कारज किया बेटे ने और फिर जब सब हो गया तब तू मुझे रखकर घर नहीं बसा सकता था। तूने मुझे पेट के लिए पराई डयोढ़ी लँधवाई।'' (6) ''चूल्हा मैं तब फूँकूँ, जब मेरा कोई अपना हो। ऐसी बाँदी नहीं हूँ कि मेरी कुहनी बजे, औरों के बिछिए छनकें। मैं तो पेट तब भरूँगी, जब पेट का मोल कर लूँगी।'' (7) ''तब न सोचा, जब तेरी गदल को बहुओं ने आँखें तरेरकर देखा।''

डोडी का गदल के प्रति कथन- (8) ''गदल, मैं बुड्ढा हूँ। डरता था, जग हँसेगा। बेटे सोचेंगे, शायद चाचा का अम्माँ से पहले से नाता था, तभी चाचा ने दूसरा व्याह नहीं किया। गदल, भैया की भी बदनामी होती न ?'' डोडी का बदले स्वर में गदल के प्रति कथन- (9) ''मेरे रहते तू पराए मरद के जा बैठेगी।''

गदल का डोडी के प्रति कथन- (10) ''तू मुझे करेगा। तुझमें हिम्मत कहाँ है देवर !....कहकर जो तू मुझे मारता, तो मैं समझती, तू अपनापा मानता है। मैं इस घर में रहूँगी ?''

डोडी का अंतिम समय आने से पहले निहाल के प्रति कथन- (11) अरे, सोच तो, बेटा! मैंने डोला कितने दिन बाद सुना है। उस दिन भैया की सुहागरात को सुना था, या फिर आज।''

डोडी की मृत्यु की खबर के बाद, गदल का मौनी के प्रति कथन- (12) ''देवर तो मेरा अगले जनम में भी रहेगा। वही न मुझे रुखाई दिखाता, तो क्या यह पाँव काटे बिना उस देहरी से बाहर निकल सकते थे ? उससे मुझसे मन फेरा, मैंने उससे। मैंने ऐसा बदला लिया उससे !'' (13) ''तू रोकेगा ? अरे, मेरे खास पेट के जाए मुझे रोक न पाए। अब क्या है ? जिसे नीचा दिखाना चाहती थी, वही न रहा और तू मुझे रोकनेवाला है कौन ? अपने मन से आई थी, रहूँगी, नहीं रहूँगी, कौन तूने मेरा मोल दिया है।'' (14) ''अरे तू तो तब पैदा भी नहीं हुआ था, बालम! तब से मैं सब जानती हूँ। मुझे क्या सिखाता है तू ?''

गदल का अपनी जिठानी दुल्लो के प्रति कथन- (15) ''गदल तो मालकिन बनकर रहती है, समझी!....चाकरी करूँगी तो अपने मरद की, नहीं तो बिध ना मेरे ठेंगे पर।''

देरोगा के पूछने पर कि ''पर तू है कौन?'', जवाब में क्षीण स्वर में रक्त से भीगी हुई गदल का कथन- (16) ''जो एक दिन अकेली न रह सका, उसी की....।''

उपरोक्त कथनों को बारिकी से समझने पर पता चलता है कि जिस नाम से कहानी का नामकरण किया गया है, वह गदल है। इस कहानी की नायिका गदल, आदर्श पत्नी नहीं बन सकी और न हि आदर्श माँ। इसने देवर के प्रति प्रेम भी बहुत की परन्तु वह प्रेम एक दिन बदला के रूप में सामने आया। बाद में गदल ने मृत्युभोज के रूप में अपने प्रेम को अभिव्यक्ति दी। यह वही गदल है जो अपने पति की मृत्यु के बाद और सम्भवत: शादी के समय से ही अपने देवर से प्रेम करती थी। संवाद (2) और (11) के आधार पर डोडी को देखकर ही गदल इनके घर आई थी। डोडी के मन में भी गदल के प्रति प्रेम उमड़ा होगा, शायद इसी कारण से गदल की सुहागरात को डोडी ने डोला सुना था। परन्तु क्या यह कहानी समाज, पाठक या छात्रों को सही संदेश देती है ? पति के अतिरिक्त किसी और के बारे में प्रणय विचार करना या अपनी भाभी के प्रति कुत्सित सोच रखना उचित है ? पति की मृत्यु के बाद दूसरे के साथ भाग जाना, देवर को नहीं अपनाने के लिए कौसना किस तरह का सामाजिक धर्म है ?

संवाद (5) के आधार पर, गदल का अपनी युवा विवाहित संतानों को छोड़कर अपनी संतान की अवस्था के बराबर युवक के साथ पलायन कर जाना, मात्र यह मानकर कि देवर ने उसे नहीं अपनाये, क्या यही आदर्श सामाजिक व्यवहार है? संवाद (8) के आधार पर, डोडी आदर्श भूमिका निभाते हुए गदल को अपनाने से इंकार कर देता है, परन्तु संवाद (9) के आधार पर, वह भी सामाजिक व्यवहार से विचलित नजर आता है। संवाद (6) के आधार पर गदल, बहुओं की नहीं सुनना चाहती, तो क्या सिर्फ इसी कारण से दूसरे मर्द के पास वह चली जाएगी, क्या यह घटना न्यायसंगत है? मौनी के साथ भाग जाना, बच्चों के द्वारा वापस लाने के बावजूद फिर भाग जाना; यह भागने का कार्य डोडी से बदला लेने के लिए ही! डोडी कैसे अपनाता उसे? संतान युक्त दो-दो युवा भतीजों के सामने यह सम्भव नहीं था। लोक-लाज भी तो था। कहानी में आदर्श न तो गदल है, न हि डोडी। डोडी को आदर्शोन्मुख कहा जा सकता है। महज बिरादरी को खिलाने के लिए गदल के द्वारा मृत्यु को गले लगाना आदर्श की पराकाष्ठा नहीं हो सकती। अपितु मौन होकर डोडी के द्वारा मृत्यु को

गले लगाना आदर्श के करीब जरूर हो सकता है। डोडी का मृत्यु से मिलने के पीछे उसके परिवार की बदनामी भी हो सकती है। डोडी चाहता था कि गदल कहीं न भागे, अपने घर पर ही रहे। अकेले रहते हुए भी डोडी गदल के परिवार के साथ रहना चाहता था। गदल के शरीर को पाने की इच्छा डोडी की न थी, वह तो उसके घर में रहकर उसका साथ चाहता था।

संविधान सर्वोपरी है, कानून सर्वोपरी है, इसके अन्तर्गत ही समाज को रहना होता है। गदल ने कानून को रिश्वत दी और नियम विरूद्ध 25 से अधिक लोगों को खाना खिलायी, इसके लिए उसे जान से हाथ धोना पड़ा। इस प्रकार कहानी का नाम गदल न होकर डोडी होना उचित था। यहाँ गदल की स्वाभिमानी प्रेम को उभारकर तथा इसे नायिका बनाकर लेखक ने समाज और पाठक के प्रति न्याय कर पाने में चूक करते हुए प्रतीत होते हैं। मुख्य नायिका के रूप में 45 वर्ष की अवस्था में गदल के द्वारा मांसल प्रेम के अभिव्यक्त होने से कहानी की आदर्श सम्प्रेषणियता पर प्रश्न चिन्ह लगता-सा नजर आता है। इसके बावजूद, डोडी के द्वारा अपनी भाभी को पत्नी नहीं बनाते हुए अशरीरी प्रेम का चित्रांकन एवं वियोग की पराकाष्ठा का वर्णन कर लेखक ने निश्चित रूप से आदर्श स्थिति निर्मिती में सफलता पायी है।

संदर्भ

रांगेय राघव, गदल।